PGGKCH

10. बालगीतम्

(प्रस्तुत पाठ गेय है । हम स्वाभिमानी बने स्वयं भी प्रसन्न रहें और संसार में भी प्रसन्नता फैलाएं । दीन दुखियों और अनाथों का सहारा बने यही इस गीत का भाव है । आइए इसे स्वर और लय सहित गाएँ ।)

मा कुरु दर्पं मा कुरु गर्वम्
मा भव मानी, मानय सर्वम् ।
मा भज दैन्यं, मा भज शोकम्
मुदितमना भव मोदय लोकम् ॥

मा वद मिथ्यां मा वद व्यर्थम्,
न चल कुमार्गे, न कुरु अनर्थम्
पाहि अनाथं, पालय दीनम्
लालय जननीजनक-विहीनम् ॥

शब्दार्थाः

मा	= मत	मानय	= आदर करो
दर्पम्	= घमण्ड को	दैन्यम्	= दीनता को
भव	= बनो	भज	= ग्रहण करो
मान	= अभिमानी	मुदितमना	= प्रसन्न मन वाले
मोदय	= प्रसन्न करो	मिथ्या	= झूठ
पाहि	= रक्षा करो	जननीजनकविहीनम्	= माता पिता से वंचित

अभ्यास प्रश्नाः

प्रश्न (1) अधोलिखित में कर्म जोड़िए -

(क) ..... मोदय ।
(ख) ..... पाहि ।
(ग) ..... पालय ।
(घ) ..... मानय ।

प्रश्न (2) अधोलिखित शब्दों को विलोम शब्दों के साथ मिलाइए -

(1) सनाथः - शोकः

(2) सुमार्गः - मिथ्या

(3) हर्षः - अनाथः

(4) सत्यम् - मानी

(5) नम्रः - कुमार्गः

प्रश्न (3) अधोलिखित वाक्यों में अव्यय शब्द भरिए -

मिथ्या ..... वद ।

कुमार्गे ..... चल ।

..... मा वद ।

दर्पं ..... कुरु ।

प्रश्न (4) अधोलिखित पङ्क्तियों को गीत के क्रम में लिखिए -

(1) लालय जननीजनक विहीनम् ।

(2) मा भज दैन्यं मा भज शोकम् ।

(3) मा भव मानी मानय सर्वम् ।

(4) पाहि अनाथं, पालय दीनम् ।

(5) मा कुरु दर्पं, मा कुरु गर्वम् ।

(6) मुदितमना भव मोदय लोकम् ।

(7) न चलु कुमार्गे न कुरु अनर्थम् ।

(8) मा वद मिथ्या, मा वद व्यर्थम् ।

(संकलित - संस्कृत धारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली)

PGQGEA